पढ़ाई में कैसे मददगार हैं चित्र?

राजेन्द्र देशमुख

पिछले कुछ वर्षों में विविध प्रोजेक्ट में काम करते हुए मुझे समुदाय व शिक्षकों को करीब से जानने और समझने का मौका लगातार मिलता रहा। साथ ही, बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को लेकर लोगों की अलग-अलग मान्यताओं को भी देख पाया। आम तौर पर माता-पिता की मंशा होती है कि बच्चे जल्दी-से पढ़ना-लिखना सीख जाएँ। बच्चों से बहुत अधिक अपेक्षाएँ होती हैं। सुबह-सुबह बच्चे ट्यूशन जाएँ, फिर दिन में भारी-भरकम बैग लेकर स्कूल जाएँ, शाम को एक बार फिर ट्यूशन। ऐसी कठिन दिनचर्या और अपेक्षाओं के बोझ से बच्चों की चिन्तन-मनन की प्रक्रिया बाधित हो सकती है। जबकि बच्चों के लिए ज़रूरी है कि उनकी भावनाओं, कल्पनाओं, विचारों एवं अभिव्यक्ति की उड़ान को जगह मिले और उन्हें सोचने व तार्किक चिन्तन के अवसर उपलब्ध करवाए जाएँ। सीखने की प्रक्रिया निरन्तर और स्वतः चलती रहती है। हम हर समय कुछ-न-कुछ सीख रहे होते हैं – एक-दूसरे से भी एवं अपने आसपास के माहौल से भी।

सीखने को उद्देश्यपूर्ण बनाना

वर्तमान में जिस प्रोजेक्ट का मैं हिस्सा हूँ, उसके तहत हमें बच्चों को स्कूल और समुदाय के बीच सीखने के मौके उपलब्ध करवाने हैं। इसमें हम आंगनवाड़ी और समुदाय समर्थित शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों पर विविध गतिविधियों द्वारा बच्चों के भाषा एवं गणित सीखने को आसान तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने की कोशिश करते हैं।

हमारे काम का ढाँचा इस प्रकार बना है कि शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के साथ पालकों और समुदाय का जुड़ाव लगातार बना रहे। समुदाय में यह भावना बनी रहे कि केन्द्र उनका है। इसके लिए हम हर महीने पालकों के साथ बैठक करते हैं। इस बैठक में केन्द्र संचालन में आ रही बाधाओं, बच्चों के साथ की जाने वाली गतिविधियों व बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारी दी जाती है। इसी तरह पालक भी अपनी बात खुलकर कह पाते हैं। कई बार उनकी बातों से यह भी पता चलता है कि उनकी केन्द्र से क्या अपेक्षाएँ हैं। जहाँ केन्द्र पर बच्चों की नियमितता हमारी ओर से एक सदाबहार मुद्दा होता है, वहीं पालकों की ओर से बच्चों द्वारा धाराप्रवाह न पढ़ पाने या गणित न आने का मुद्दा रखा जाता है। कई

बार पालक हमारी गतिविधियों के औचित्य पर भी सवाल उठाते थे।

ऐसा ही एक वाकया होशंगाबाद ज़िले में मरोड़ा गाँव के केसला विकासखण्ड का है। हमारे संचालक ने बताया कि कई पालकों का कहना है कि केन्द्र पर पढ़ाने से ज़्यादा तो बच्चों से चित्रकारी करवाई जाती है। "आपके केन्द्रों पर बच्चों से केवल चित्र ही बनवाते हैं। चित्र बनाने से बच्चों को क्या ही मिलेगा, कौन-से पेंटर बन जाएँगे। चित्र बनाने से तो केवल बच्चों का टाइम पास होता है। इससे अच्छा तो आप बच्चों को कुछ पढ़ने-लिखने या याद करने को दें।" संचालक का कहना था कि बच्चों को चित्र बनाना अच्छा लगता है और वे उत्साह के साथ इसमें हिस्सेदारी करते हैं।

पालकों के साथ बातचीत

यह एक गम्भीर मुद्दा था। दरअसल, यह हमारी सोच पर निर्भर करता है कि हम चित्रकारी को किस नज़रिए से देखते हैं। क्या सिर्फ पेड़-पौधे, जानवर आदि के चित्र बनाकर, उनमें रंग भरना ही चित्रकारी है? चित्रकारी से तो बच्चों में तार्किक, मानसिक, काल्पनिक क्षमता के साथ-साथ आनुपातिक चित्रण और हस्तकौशल की क्षमता का विकास भी होता है। इन सब मुद्दों पर संचालक साथियों से हमारी बातचीत हुई और यह तय हुआ कि मरोड़ा में पालकों के साथ एक बैठक करके, इस मुद्दे पर कुछ बातचीत की जाए।

• पहली गतिविधि

जब हम पालक-बैठक करने पहुँचे तो बातचीत खेत-खलिहान से शुरू होकर बच्चों की पढ़ाई की ओर मुड़ गई। इसके बाद हमने अपनी योजना अनुसार सभी पालकों को एक-एक कोरा कागज़ और मोम कलर दे दिए।

हमने पालकों से कहा कि "आप सभी ने अपने बचपन में किसी-न-किसी तरह के चित्र बनाए होंगे। आज हम उस पल को याद करते हुए कागज़ पर फिर से अपनी पसन्द का चित्र बनाएँगे और उसमें रंग भी भरेंगे।" कुछ देर सभी पालक एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते रहे। फिर उन्होंने अपने-अपने कोरे कागज़ पर कुछ बनाना शुरू किया। इसके लिए उन्हें आधे घण्टे का समय दिया गया था।

जब सभी ने चित्र बना लिए तो उनसे चित्रों में रंग भरने के लिए कहा गया। रंग भरने के बाद सभी पालकों ने अपने-अपने चित्र बीच गोले में रख दिए। सभी पालकों ने एक-दूसरे के चित्रों की बहुत सराहना की।

• दूसरी गतिविधि

अगली गतिविधि के निर्देश में हमने कहा कि "इन चित्रों में से किसी भी एक के बारे में 4-5 वाक्य बोलिए। चित्र को देखकर जो भी मन में आए, उसे बोल सकते हैं।"

पहला पालक - 'घर' पर

हम घर में रहते हैं। घर ईंटा, पत्थर, लकड़ी, मिट्टी से बनाया जाता है। घर में कलर भी करते हैं और सजाते भी हैं।

दूसरा पालक - 'गाय' पर

गाय के चार पैर होते हैं। गाय घास खाती है। गाय की पूजा भी करते हैं। उसके गोबर से उपले बनाते हैं जो कि जलाने में काम आते हैं।

इसी प्रकार से अन्य पालकों ने भी अलग-अलग चित्रों के बारे में बताया।

• तीसरी गतिविधि

अगली गतिविधि के लिए हमने सभी पालकों से चार समूहों में बँटने के लिए कहा। पालकों द्वारा बनाए गए चित्रों में से चार चित्रों को इस गतिविधि के लिए चुना और फिर सभी समूहों से कहा कि इन चित्रों को देखकर प्रत्येक समूह को एक-एक कहानी बनानी है। लेकिन शर्त यह है कि उस कहानी में इन चारों चित्रों का विवरण होना चाहिए।

इस प्रक्रिया के दौरान ज़्यादातर पालक खुलकर एक-दूसरे से बातचीत करते नज़र आए, जो हम सबके लिए एक अच्छा एहसास था।

पालकों का फीडबैक

इन गतिविधियों के समाप्त होने के

बाद हमने पालकों से सवाल किया कि इस पूरी प्रक्रिया में उन्हें क्या महसूस हुआ। तब पालकों ने बताया कि "जब हम चित्र बना रहे थे तो हमें सोचना पड़ रहा था कि क्या बनाएँ। थोड़ा डर भी था कि चित्र कैसा बनेगा। कुछ बेडौल बन गया तो बाकी लोग हमारे चित्र पर हँस न दें।" एक दीदी ने कहा, "मुझे मन में लग रहा था कि मेरा चित्र सबसे अच्छा बने।" कुछ पालकों ने कहा कि "जब वे एक-दूसरे के चित्रों की तारीफ कर रहे थे तो बहुत अच्छा लग रहा था।" "चित्रों पर बोलते समय हमारे परिवेश से जुड़ी चीज़ें होने से हम खुलकर बोल पा रहे थे।"

इसके बाद हमने पालकों के सामने एक सवाल रखा, "अब आपको क्या लगता है, चित्र बनाने जैसी गतिविधि बच्चों के साथ करनी चाहिए या नहीं?" सभी पालकों ने एकसाथ 'हाँ' कहते हुए अपनी सहमति दर्ज करवाई।

हमने पालकों से यह भी साझा किया कि इस तरह की गतिविधि के दौरान आपकी तरह बच्चे भी एक-दूसरे के चित्र देखकर खुश होते हैं। जब वे चित्रों के बारे में बोल रहे होते हैं तब अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं, जिससे उनकी झिझक दूर होती है। वे अपने परिवेशीय अनुभवों को शामिल करते हैं। अलग-अलग रंगों का इस्तेमाल करते हैं, चित्रों में गणितीय अनुपात बनाए रखने का प्रयास करते हैं। बच्चे खुलकर अपनी बात रख पाते हैं, चिन्तन करते हैं जिस वजह से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। इस तरह बच्चों के साथ सीखने-सिखाने के मौके सरल होते जाते हैं।

पालकों को यह समझाने का प्रयास भी किया गया कि इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों का भाषाई कौशल बेहतर करने में मदद करती हैं। साथ ही, शिक्षा नीति में भी यह बताया गया है कि बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सहज व भय

पालकों द्वारा बनाए गए चित्र जिन्हें कहानी बनाने के लिए चुना गया था।

बच्चों की पढ़ाई में समुदाय या पालकों की भूमिका

बच्चे सिर्फ शाला अवधि के दौरान ही नहीं सीखते बल्कि वे अपने परिवार और समुदाय के साथ जो समय बिताते हैं, उस दौरान भी सीखते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और एन.सी.एफ. 2005 एवं 2020 में भी बच्चों की पढ़ाई में या सीखने की यात्रा में पालकों व समुदाय की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

एक शिक्षक के रूप में शाला में पढ़ाते हुए एक ढाँचागत व्यवस्था के तहत आपका बच्चों के घर आना-जाना होता है, ग्राम सभा के सदस्यों से मुलाकात होती है, और स्कूल मैनेजमेंट कमेटी जैसे फोरम शाला और पालकों को जुड़ने के मौके देते हैं।

जब गैर-लाभकारी सामाजिक संगठन गाँवों में शैक्षिक केन्द्रों का संचालन करते हुए समुदाय के साथ काम करते हैं तो शाला के पारम्परिक फोरम के अलावा पालकों के साथ सतत सम्पर्क के और भी मौके मिलने लगते हैं।

आम तौर पर इन शैक्षिक केन्द्रों के संचालक पालकों और समुदाय के साथ काफी करीबी सम्पर्क बनाकर रखते हैं। पालकों से बातचीत के दौरान जितना ज़ोर बच्चे की नियमितता पर होता है, उतना ही ज़ोर निम्नलिखित बिन्दुओं पर भी दिया जाता है –

- पालक प्रतिदिन बच्चों के साथ समय बिताने को अपनी प्राथमिकता में शामिल करें। बच्चों के साथ बातचीत करें, बच्चों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनें, उन्हें अधिक-से-अधिक बोलने के मौके दें। बच्चों को कहानी, कविता, किस्सा आदि सुनाएँ। कुछ अन्य गतिविधियाँ भी करवाएँ। पालक भी अपने कार्यस्थल के अनुभव बच्चों को बता सकते हैं।
- सेंटर से मिली सामग्री को देखें, खुद भी पढ़ सकते हैं या करके देख सकते हैं। सेंटर पर जो पढ़ाया-सिखाया जाता है, उसके पीछे के अकादमिक पहलुओं को भी समझने का प्रयास करना चाहिए।
- घर पर यथासम्भव भयमुक्त माहौल बनाकर रखें।
- यदि पालकों का कोई वॉट्सएप ग्रुप हो तो घर पर बच्चों के साथ की जा रही गतिविधि की फोटो या वीडियो भी ग्रुप पर शेयर कर सकते हैं।
- घर पर भी प्रिंटरिच वातावरण बना सकते हैं। जैसे किचन में उपयोग आने वाली सामग्रियों के डिब्बों पर नाम की परची चिपकाना, दीवार पर घर के सभी सदस्यों के नाम की पर्चियाँ चिपकाना, कोई कविता या गीत की पंक्तियाँ लिखना व विविध शब्द, समाचार पत्र, विविध रेपर, किताबों के नाम वगैरह पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित करना।
- बच्चों को मोबाइल पर अपनी आवाज़ में कविता, गीत, चुटकुले, किसी चीज़ का वर्णन आदि रिकॉर्ड करने के लिए प्रोत्साहित करें।

- बच्चों से चित्र बनवाना, मिट्टी के खिलौने बनवाना, अँगूठे की छाप से अलग-अलग आकृतियाँ बनवाना और उन पर बच्चों से बातचीत करना।
- इसी तरह गणितीय कौशलों पर आधारित गतिविधियाँ भी पालक घर पर करवा सकते हैं, जैसे - कपड़े, चप्पल-जूते गिनने के लिए कहना, माप-तौल सम्बन्धी गतिविधि करना, नोट-सिक्के पहचानना, बच्चों को खरीददारी के समय साथ लेकर जाना और विविध चीज़ों के दाम समझने का मौका देना।
- व्यक्तिगत साफ-सफाई सम्बन्धी आदतों का विकास, कचरे का सही निपटारा करना सिखाना।

आप देखेंगे कि इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से पालक घर पर न सिर्फ बाल-केन्द्रित शिक्षण का प्रयास कर रहे होंगे बल्कि बच्चों को आसपास के परिवेश को बेहतर रखने के लिए भी प्रेरित कर रहे होंगे। इन्हीं दोनों उद्देश्यों के लिए शाला भी तो कोशिश करती है, है न?

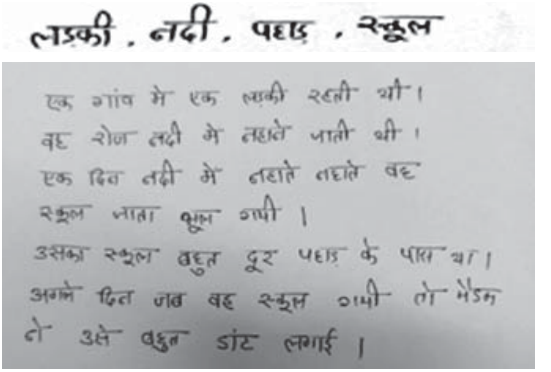

समूह क्रमांक 2 द्वारा बनाई गई कहानी।

मुक्त माहौल बहुत ज़रूरी होता है। मनोरंजनपूर्ण गतिविधियाँ बच्चों को कक्षा-कक्ष में जोड़े रखने में मदद करती हैं।

इस पालक बैठक की समाप्ति पर हमें इस बात का सुकून था कि हम पालकों को अपना पक्ष समझा पाए थे और उन्होंने शायद बच्चों द्वारा चित्र बनवाने की गतिविधि के औचित्य को भलीभाँति महसूस कर लिया था।

राजेन्द्र देशमुख: वर्तमान में *एकलव्य* के एक प्रोजेक्ट के तहत केसला, ज़िला होशंगाबाद में कार्यरत हैं। विज्ञान विषय में रुचि है।

सभी चित्र एवं फोटो: राजेन्द्र देशमुख।